क्या आप जानते है ?

1. ब्रह्माण्ड क्या होता है ?
2. देवता किस रुप में किस लोक में कहाँ–कहाँ उपस्थित है ?
3. आत्मा क्या होती है ?
4. शरीर क्या होता है ?
5. शिवलिंग की पूजा क्यों की जाती है ?

तर्कों/तर्क शास्त्रियों व कुतर्कों का स्थान नहीं है

सौरभ कण

मूल्य : 20 रुपये
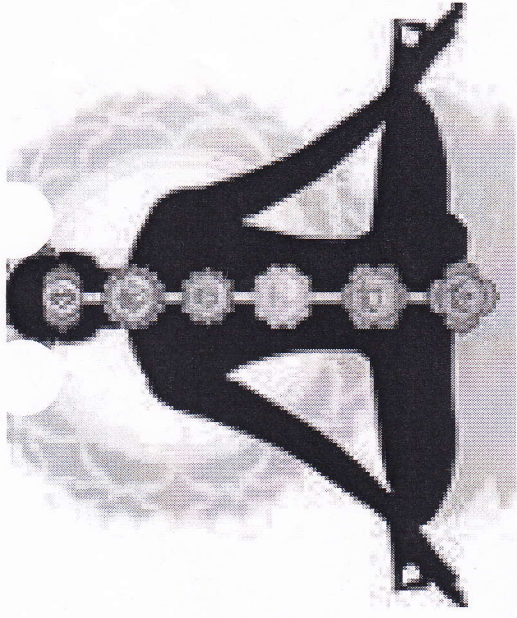
: प्रकाशक , मुद्रक, वितरक :
बार्चे इंटरप्राइजेस

न्याय क्षेत्र खरगोन

अतल रसातल से पूर्ण ब्रह्म लोक तक

स्पष्टीकरण : यह श्वेत नाड़ी सुष्मुन्ना नाड़ी नहीं है , यह नाड़ी पूर्ण ब्रह्म का प्रथम प्रकाश ही है। इसके बाद जो शेष रहता है उसे ब्रहमरन्द्र कहा गया है। इस नाड़ी में जैसे छोटे-छोटे अनेक रोम होते है इसी में रमण करने को ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म में रमण करना कहा गया है।

:: लेखकीय कथन ::

किसी ने सही कहा है समय व समझ खुशकिस्मत व्यक्ति को मिलती है। संघर्ष में व्यक्ति अकेला रहता है। जीवन में रिश्ते होना भी ज्यादा जरुरी नहीं होता। मैं रोज अमृत पीता हूँ , रोज अमृत इस पुस्तक के रुप बांटता हूँ। ध्यान , योग, शम, दमन, तितिक्षा, उपरति, कृतज्ञता, कृतार्थता व आभार इत्यादि के बारे में लिखे तो सैकड़ों पन्ने कहानियों में पट जाए।

संक्षिप्त में इतना ही लिखूंगा। पढ़े और परिणाम प्राप्त करे, ताकि दुःखरुपी संसार सागर से पार ले जाया जा सके।

इतनी ऊँचाई पर व्यक्ति कोई भी हो लिखना तो दूर बोल भी नहीं पाता। यही वजह है कि संत मौन धारण कर लेते है। बहुत मुश्किलों में यह पुस्तक तैयार की गई है।

प्रवीण कुमार बार्चे
निवासी-बलकवाड़ा
तहसील कसरावद, जिला प.नि. खरगोन
मो.नं. 7697169794

परम आदरणीय
माताजी ग.भा. कलावती व
पिता स्व. श्री राजनाथ जी
को सादर समर्पित

द्वितीय भाग :

द्वितीय भाग परम अक्षर ब्रह्म लोक

तृतीय भाग :

तृतीय भाग स्वर्ण प्रकाश देखे पूर्ण ब्रह्म लोक

चतुर्थ भाग :

यह प्रकाश ह्रदय के दाहिनी ओर जैसे चिपका हुआ सा रहता है। पूर्ण मोक्ष पश्चात चांदी के प्रकाश सी दिखती है जो छोटा धागा बिखेरा हुआ हो कि तरह दिखती है बाहर आ जाती है तथा तीव्रतम गति से विलिन हो जाती है। यह प्रकाश त्रिकुटी मध्य से बाहर खींचकर निकलती है। जिसका स्पष्ट अनुभव होता है। इस क्षेत्र में जाने की गति पलों में होती है। यह अत्यंत सुंदर व चमत्कारिक लोक है, मैंने इसे पलों में जैसे अलग अलग बिखेरे हुए पत्ते, टहनियां, तना, जड़े एक पल में इकट्ठी हो व वृक्ष बन जाएँ इस प्रकार देखा है। जो बैकुण्ड धाम में वर्णित है।

पंचम भागः—

परम अक्षर ब्रह्म का द्वितीय लोक में वर्णित है।

संपूर्ण परम अक्षर ब्रह्म लोक प्रकाशित हो रहा है, जो 75 प्रतिशत भाग में है। शेष 25 प्रतिशत भाग क्षर ब्रह्म एवं अक्षर ब्रह्म को दिये है व क्षर व अक्षर ब्रह्म की उत्पत्ति नाद से की गई है। शेष हल्का नीला प्रकाश परम अक्षर ब्रह्म के दूसरे लोक में वर्णित है।

हो जाती है। आज भी पुलकित हो उठती है व हृदय की गहराई स्मरण मात्र से अनंत गुना हो जाती है तथा जिसे कोई उपमा प्रदान नहीं की जा सकती है, जो रंग हम देखते रहे है। उन रंगों से भी भिन्न रंगों का प्रतिपादन पृथ्वी के पदार्थों से नहीं किया जा सकता वह निम्नानुसार है –

1. वह अदभूत हराकण था जो सुई की नोंक के उपर टीक सकता है अत्यंत तीव्रतम गति से मेरे संपूर्ण शरीर को लिपट गया जैसे सर्प लिपटता है। जो हवा के भार इत्यादि से भी हल्का था। इसके प्रकाश की तुलना नहीं की जा सकती , किंतु मोर पंख में अत्यन्त चमकीला व हरा प्रकाश है, उससे मेल खाता था।

स्पष्टीकरण : यहाँ से यात्रा का प्रारंभ था। यह प्रकाश सम्पूर्ण यात्रा के पश्चात में विवरण दे रहा हूं (तब संभव नहीं था) किंतु अब संभव हो गया , यह पूर्ण ब्रह्म का प्रकाश है (देखे इसी लेख में अंतिम छोर पर)

2. वे दो गोले थे एक सफेद व एक हरा गहरा जो मोर पंख का हरा चमकीला रंग का होता है , से तुलना की जा सकती है। ऊपर का गोला बड़ा था व नीचे का गोला छोटा था। वहाँ कोई नहीं था, फिर भी ऊपर का बड़ा गोला बार–बार नीचे के गोले को ऊपर खींच रहा था, उनके मध्य एक रस्से की मोटाई के बराबर सफेद कड़ी से जुड़ा था। नीचे गोले का प्रकाश क्षर/अक्षर ब्रह्माण्ड में जलने वाले समस्त सूर्यों की गैसें है जो निरंतर बाहर निकलती रहती है। इन्हीं गैसों का विलय पूर्ण ब्रह्म के प्रकाश में विलिन होता रहता है।

लोकः

अतल/रसातलः

इसकी गहराई का छोर नहीं है, इसलिए इसे अतल नाम दिया गया है। पृथ्वी के नीचे का प्रथम लोक जैसे हजारों फीट की गहराई लिए व गोलाई लिए है, यह असाधारण रुप से गहरी काली जैसे ईंटें जुड़ी रहती है। इस प्रकार प्रतीत होता है। यहाँ जाया जा सकता है। ऐसा लगता है जैसे चमकीले चाँदी जैसे द्रव्य बूंदों के रुप में चमक रहा है। इसलिए इसे रसातल नाम दिया जा रहा है। संभव है वैज्ञानिकों को दूर बीच में यह क्षेत्र ब्लेक होल के रुप में दिख रहा हो।

पार्वती :

माँ पार्वती अष्ट भुजा व शेर पर सवार कर विशेष प्रकार के अष्ट चक्र युक्त स्वर्ण चक्र पर विराजमान दिखी। आप शुद्ध भारतीय वेशभूषा में अष्टभुजी रुप में है।

स्पष्टीकरणः– अगर आप दुर्गा होती तो आपका प्रकाश सिंदूरी होता, जो आपके शरीर से निकल रहा होता, किंतु यहाँ पर ऐसी स्थिति नहीं देखी गई इसलिए आप पार्वती है। प्रथमतः आप सती, द्वितीय रुप में पार्वती व तृतीय रुप में आप मत्स्या कहलाई।

भु–लोक :

भु–लोक में विशाल मैदान जो छत सहित हो यहाँ गणेशजी विद्यमान है एवं ऊँचाई पर बैठे है । यहाँ अदृश्य शक्ति से विशाल दरवाजा खुलता है दरवाजा खुलते ही यहाँ हजारों संतों का अन्दर प्रवेश होता है। जैसे भगदड़ मची

हो। ये सभी संत भारतीय वेशभूषा भगवा वस्त्र पहने हुए है एवं दाढ़ी बड़ी हुई कोई फेटा बांधे हुए प्रवेश करते है जो गणेशजी के दर्शनों के लिए आते है।

स्पष्टीकरण :

गणेशजी का मुखमंडल श्वेत हाथी के मुखमंडल जैसा है। इससे स्पष्ट है कि पहले या अन्य ब्रह्माण्ड के किसी स्थल पर श्वेत हाथी रहते होंगे। उनकी सुंड में दो –दो इंच पर दोनों तरफ बारीक रक्त लकीरें है।

पाताल लोक :

यहाँ पर बड़े व चपटे मस्तिष्क वाले अर्द्ध नग्न बड़े काले लोग व अर्द्ध नग्न नारियाँ रहती है। यहाँ श्वेत प्रकाश से लोक प्रकाशित है। यहाँ पर पत्थरों से निर्मित तीन तरफ खुले हुए मंदिर है। जो छोटे है , किन्तु लोग मंदिर के नीचे ही रहकर पूजा करते है।

स्पष्टीकरण :

जनश्रुति अनुसार पाताल लोक में बली नामक दैत्य को पृथ्वी से वामन अवतार धारण कर तीन पग पृथ्वी, विष्णु द्वारा मांगी गई थी जो दान देने के पश्चात पाताल लोक में इन्हे प्रश्रय दिया गया था।

भुव लोकः

वास्तव में यह हमारी पृथ्वी ही है इसी में रुद्र अवतार के रुप में शिव बार–बार प्रकट होते है इसी को शिव कहाँ गया है। यही सौराष्ट्र सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनं, महाकाल, ओंकार ममलेश्वरं, बैजनाथ, भीमाशंकर, रामेश्वरम नागेश, विश्वेष , त्र्यम्बकं, केदार, घृष्णेश इत्यादि नामों से परिचित भारत भूमि में हुए है। आप ही रावण को वर देते है तथा भुवः पृथ्वी लोक व अन्य ब्रह्ाण्ड के

त्रिकुटी स्थान :–

तीनों नाड़ियों ईडा, पिंगला व सुषुम्ना नाड़ियों के मिलने का स्थान है जो तीसरी आंख से मिलती है। इसलिए इसे त्रिकुटी स्थान नाम दिया गया है । ईसान या शिव पर दहकते हुए अंगारे शरीर में हृदय स्थान पर बनते है। जिनकी संख्या सैकड़ों में होती है। रोमावलियों से पिलीधान की तरह प्रकाश प्रस्फुटित होता है।

मस्तिष्क के पीछे अर्दचंद्र जो खड़ा हो सुर्ख गर्म लोहे की तरह दिखता है, जो मस्तिष्क पर सुई की चुबन होती है , उससे असंख्य सुईयाँ चुबती हुई महसूस हाती है। मुडो की माला पहनाई जाती है, यह शिव पद है। (देखे विस्तृत पद इसी पुस्तक में)

ब्रह्म पद :– दांतों पर अदभूत प्रकाश पंक्ति दोनों ओर दिखती है, इसके निकलते ही ये सभी आत्मा स्वरुप में पेट में रहते है, यही ब्रह्मा के शरीर में प्रलय पर्यन्त में सूक्ष्म रुप में रहती है। यह शाश्वत सत्य है। यहाँ आत्माएं छोटी सूक्ष्म मछलियों के ढ़ेर की तरह पेट में रहती है।

पूर्ण ब्रह्म

पूर्ण ब्रह्म : पूर्ण ब्रह्म पांच भागों को प्रकाशित करते है।

प्रथम भाग :

इसका वर्णन हरा तीव्र मयूर पंख के प्रकाश की तरह है देखे प्रकाश स्वरुप कण का उल्लेख देखे इसी पुस्तक में लिखा गया। (पृ.क्र.25)

क्यों : उन अदभूत, परम अलौकिक, अविस्मरणीय पल, सत्य, विलक्षण, बैजोड़, वायु के स्पर्श से भी हल्का जिसकी कल्पना मात्र से रोमावलीया पुलकित

है। जो पूर्ण ब्रह्म के स्वर्ण प्रकाश में विलीन हो जाता है। (हिरण्यमय प्रकाश) यह प्रकाश महास्वर्ग में हीरे की आकृति लेता है त था परम अक्षर ब्रह्म (सतलोक में) कवड़ी जैसा आकार रहता है।

8. **<u>दो अतिरिकत हाथ</u>** :दो अतिरिक्त हाथ यहाँ पर रुद्र की कृपा से प्रकट होते है।

स्पष्टीकरण : जो आत्मा का प्रकाश शरीर के अं दर प्रकट होता है एवं बाहर है वही प्रकाश क्षर, अक्षर ब्रह्म के ब्रह्मांड के बाहर प्रकट होता है। इसका उदाहरण मयूर पंख को देखकर अंदाज लगाया जा सकता है या उपमा दी जा सकती है। यह प्रकाश उपस्थ भाग से उंचाई प्राप्त करती आत्मा का है व दूसरे बार डाली गई आत्मा का है। 2. आत्मा जो उपस्थ व गुदा के मध्य से यात्रा आरंभ करती है। उसे पूर्ण ब्रह्म के द्वितीय स्वर्ण प्रकाश में विलीन होता है। इसी स्वर्ण प्रकाश के कारण आपको हिरण्यमय पुरुष कहा गया है।जो हृदय के बाहिनी ओर दोनो आंखों के उपर से बाहर निकलता है (देखे पृ.क्र.6)दूसरी आत्मा का प्रकाश पूर्ण ब्रह्म के प्रथम चांदी के प्रकाश में विलीन होता है। तृतीय आत्मा का प्रकाश जो हृदय की दाहिनी ओर रहती है वह इस क्षेत्र से आपके शरीर को उंचाई पर ले जाते हुए प्रकाश उत्पन्न करते हुए परम अक्षर ब्रह्म क्षेत्र में ले जाती है। यदि मोक्ष नहीं प्राप्त होता है तो ये आत्माएं अशरीर या शरीर रुप में प्रथम स्वर्ग लोक या पृथ्वी पर ही विचरण करती है।

<u>तीसरी आंख</u> :– दोनों आंखों के मध्य के भाग से थोड़ी 1 इंच उंचाई पर यह आंख है, जो ध्यान योग से खुलती है।

मालिक है। आप आज भी भारत भूमि पर विद्यमान है तथा प्रत्येक व्यक्ति को नाम से जानते है। आप ही वर दाता है। आप ईशान (उत्तर) से आते है। आपके आदेश चलते है। आप जब आते है तब स्पष्ट संकेत प्राप्त हो जाते है व आवाज भी आती है कि कोई आ रहा है। आपको पता है कि भक्त क्या चाह रहा है किंतु आप चले जाते है , तब भक्त सब कुछ खो देता है। क्योंकि भक्त ठगा सा रहता है आपके यहाँ सशरीर आत्माएं नित्य खड़ी रहती है व आप उन्हे मोक्ष प्रदान कर रहे है। आप कृपालु है आपकी आंख से अश्रु धाराएं भक्त के लिए होती है। यह स्थिति दास ने वहां जाकर स्पष्ट देखी है व मिला है। आप ईशान या उत्तर से आते है। तथा आप ही शिव या ब्रह्मा है। आप ही वरदान देते है तीसरी बार आपको मैंने श्वेत नंदीश्वर जो नीचे बैठे हुए है तथा नंदीश्वर का मुंह पश्चिम में है तथा आप उत्तर तरफ मुंह कर खड़े है स्पष्ट देखा है आप ईशान है। आप चारों वर्णों में अवतरित हो है यह प्रकाश मस्तिष्क में सघन रुप से प्रस्फुटित होते है। प्रथम काला श्वेत पीला और नीला यही चार प्रकाश द्वितीय बार प्राप्त आत्मा के जलने से होते है। रन्द्र चार रुपों में या जातियों में या समुदायों में प्रकट होते है। यही मानव समुदायों में प्रकट होते है।

उदाहरण के लिएः– गीता के अध्याय 10 के श्लोक 23 में इसका विस्तृत वर्णन दिया गया है।

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्॥

अर्थ :– मैं एकादश रुद्रों में शंकर हूँ और यक्ष तथा राक्षसों में धन का स्वामी कुबेर हूँ। मैं आठ वसुओं में अग्नि हूँ और शिखरवाले पर्वतों में सुमेरु पर्वत हूँ।

स्पष्टीकरणः– एकादश रुद्र द्वापर युग में गीता में उपरोक्त श्लोक में बताए गये है। उसके पश्चात भी अनेक रुद्र हुए है , उन रुद्रों की गिनती नहीं है।

पांच जन्य शंखलोक :

वहाँ सुखे नारियल की तरह शंख सजा है एवं इर्द गिर्द के रंग जैसे किसी ने स्वर्ण डंडियाँ लगाई हो व उन डंडियों के ऊपर स्वर्ण प्रकाशयुक्त छोटे बल्ब 8 से 10 इंच के फासले पर लगाये हो यह प्रकाश वहाँ के आसमान को छू रहा है। डंडियाँ ऐसे लगती है जैसे स्वर्ण जैसा पतला धागा बांधा हो।

आनादि ब्रह्मा :

आप के नेत्र हाथ, कान और मस्तिष्क मानव स्वरुप में नहीं है। किंतु आप 6 से 6.5 फीट उंचाई के श्वेत प्रकाश स्वरुप एवं 4 फीट बाय 4फीट लंबाई, चौड़ाई लिए समान्तर प्रकाश स्वरुप दिखते है तथा ऐसा लगता है। जैसे इन्हे कोई अपारदर्शी बर्फ की शिला खड़ी कर दी हो। निश्चित रुप से आप अनादि ब्रह्मा के रुप में क्षर ब्रह्म ही है। किसी ने सही कहा है बिना हाथ के कार्य करते, बिना कान के सुनते, बिना पांव के आप चलते है तथा बिना मुंह के आप खाते है।

पितृ लोक :

यहाँ आत्माएं प्रकाश स्वरुप में उठती है । ऊपर हल्का भार तथा गोलाई वृत्ताकार लिए होती है तथा नीचे का भाग सुनहरा होता है। ऊपर के भाग के मध्य हल्का काला वृत्त दिखाई देता है तथा बाहर के वृत्त सुनहरा रहता है। ऐसा लगता है कि नीचे के भाग में किसी ने भारी रस्सी लटका दी हो। यह सभी 6 इंच

4.**अनहद नाद :**

यहाँ पर अनहद नाद गुंजता है जो अत्यंत शांति होने पर ही सुनाई देता है। अन्य लोगों ने यहाँ पर डमरु, नगाड़े, भैरी इत्यादि के आवाजों के बारे में बताया है, किन्तु यह असत्य है। उक्त वाद्य यंत्रों का सुनाई देना क्षर ब्रह्म की उदारता या वरदान के पश्चात ही संभव है , जिसका वर्णन शिव तांडव स्त्रोत में रावण ने भी किया है।

5.**श्वेत प्रकाश :**

पूर्ण ब्रह्म का प्रथम प्रकाश :श्वेत प्रकाश बायी ओर दिपक की लो की तरह दिखता है।

उदा.के लिए–गीता का अध्याय क्र. 13 श्लोक क्र. 17 -

ज्योतिषामपि तज्जयोतिस्तमसः परमुच्यते।

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।

अर्थ – वह परब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति एवं माया से अत्यन्त परे कहा जाता है। वह परमात्मा बोधस्वरुप, जानने के योग्य एवं तत्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है और सबके हृदय विशेष रुप से स्थित है। 17।

6. **पूर्ण ब्रह्म का द्वितीय प्रकाश :**

हृदय स्थान के दाहिनी ओर यह प्रकाश रहता है। जो अत्यन्त महीन धागे की तरह लपेटा रहता है जो दोनों आंखों के मध्य खिंचाता हुआ बाहर निकलता है , जिसका स्पर्श स्पष्ट प्रतीत होता है। 7. उपस्थ तथा गुदा के मध्य से निकलती हुई आत्मा का प्रकाश क्षर व अक्षर ब्रह्म एवं पूर्ण ब्रह्म तक जाता

अर्थ – जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेम से पत्र, पुष्प, फल , जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र पुष्पादि मैं सगुणरुप से प्रकट होकर प्रीतिसहित खाता हूँ।।26)

हृदय स्थान में :

यह छाती व पीठ के अन्दर रीढ़ की हड्डी के सामने का स्थान है।

निला प्रकाश : यहाँ पर नीला प्रकाश आत्मा का उठता दिखता है, यह प्रकाश सम्पूर्ण छाती में धीरे–धीरे उठता है व पूरी छाती को भर देता है।

1. **स्वर्ण मय प्रकाश :**

यह प्रकाश स्वर्ण किरणों के रुप में उठता है जो हृदय से उठता है जो अंतरिक्ष में विलिन होता है।

2. **शंकरजी :**

हृदय के बायी ओर आप विराजमान दिखते है आप के मस्तिष्क से गंगा प्रभावित हो रही है। आप मृगछाल पर बैठे है। त्रिशुल और डमरु आप के दायनी ओर शोभायमान है तथा आप के दो ही हाथ है। नाग का हार पहने हुए है एवं मृगछाल पहने है। शंकरजी बाहर से शुद्ध होते है तथा जल इत्यादि चढ़ाने पर प्रसन्न होते है। जैसे भारत के फोटो या मूतियाँ निर्मित की गई है इसलिए आप को गंगाधर आदि नामों से उपमा दी गई है।

3. **विष्णुजी :–**

हृदय के दायी ओर यहाँ पर विष्णुजी शयन करते दिखते है, किन्तु यहाँ पर शेषनाग नहीं है। किन्तु वास्तव में शंकर व विष्णु नहीं है यह स्वर्ग एवं शिवलोक के प्रतीक मात्र है।

लंबाई तक एवं 4 इंच वृत्त परिधि में पूर्ण है।

यही से ये आत्माएं अपना शरीर धारण कर या तो मोक्ष के रुप प्राप्त होती है। या स्वर्ग लोक में जाती है या पुनः जन्म मरण के चक्र में रहती है।

स्व लोक :

इस लोक में सर्प अलग अलग है तथा क्रोधित हो कर बार–बार फण मारते रहते है ऐसा दिखाई देता है एवं इनका रंग गुलाबी रहता है तथा इस लोक में सूर्य छोटा किंतु रक्त वर्ण लिए चमकता है यह ग्रह छोटा है। इस सूर्य के प्रकाश से इन सर्पों की खूबसूरती बढ जाती है। आदि ग्रंथों में आप को वासुकी सर्प की संज्ञा दी गई है।

उदाहरण के लिए :– गीता के अध्याय नं. .... के श्लोक क्र.28।

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ।।

अर्थः– मैं शस्त्रों में वज्र और गौओं में कामधेनु हूं। शास्त्रोक्त रीति से संतान की उत्पत्ति का हेतु कामदेव हूँ और सर्पों में **सर्पराज वासुकि हूँ।**

नर्क लोक :

यहाँ एक सुरंग के माध्यम से जाना रहता है। यहाँ एक अत्यन्त साधारण व्यक्ति है जो साधारण कपड़े कमीज पेजामा पहने है।

यहाँ एक श्वेत वस्त्र पहने महिला आती है, जो उंची एवं मोटी सुंदर है। यहाँ यह औरत गुफा या स्थान पर चली जाती है जिसका पता नहीं चला। यह औरत भारत में बोहरे समाज की औरतों जैसे कपड़े पहनती है , वैसी ही कपड़े धारण किये हुए है। यह औरत प्रथम सती , द्वितीय पार्वती तथा तृतीय मत्स्या

कहलाई। जिसका स्पष्ट विवरण शिवपुराण में दिया गया है।

जो मत्स्य देश की राजकुमारियों जैसे कपड़े पहनने के कारण मत्स्या नाम दिया गया अथवा मछलियों के आकार के कपड़े पहनने के कारण पुराणों में मत्स्या नाम दिया गया।

विष्णु पद रुप :

विष्णु मृग चर्मधारी परशुरामजी तथा वाराहजी है जो भगवा वस्त्रधारी है। मानव सदृश्य ही है तथा मुखाकृति वराह जैसे है, किंतु रंग लाल ही है। जैसे शेषधड़ का है असाधारण मुखमंडल मनुष्य के मुखमंडल जैसा ही है, आप दोनों के दो-दो हाथ ही है।

जन लोक :

इस लोक में सदाशिव का वास है। आप ही धर्मराज है। आप क्षरब्रह्म है। आप ही यमराज है। आपके दर्शन होते है जैसे एक बड़ा प्लास्टिक का बर्तन लो उसमें पानी भरो व चांदी की पन्नी इसमें डाल दो, अब इसमें हाथ डालकर गोल तीव्रतम गति से घुमाओं व छोड़ दो। थोड़ी देर बाद वह पन्नी मध्य में घुमेगी ऐसे ही यह द्वार खुलता है किंतु अंदर जाने की आज्ञा नहीं है। यह द्वार गले में है तथा आपका मुंह पश्चिम में हो तभी यह द्वार की साधना करते समय यह खुलता है। यहाँ सदाशिव का दिव्य मुखमंडल भारत भूमि में बलरामजी का फोटो है वैसे ही है आपके पावों से श्वेत उर्जा मुख मंडल तक निरंतर बह रही है। जैसे किसी जुलाहे ने कोई बारीक धागे कपड़े बुनने के लिए लंबी छोर पर सघन रुप से बांध दिए हो। आप चूंकि पश्चिम दिशा में मुंह करके खड़े है, इसलिए हवा उत्तर से

अवस्था में यहाँ रहता है।

यह यहाँ काले चूहे के सदृश्य रहता है। भला यहाँ नागिन का क्या काम जो यहाँ साढ़े तीन हाथ लम्बी सुप्त अवस्था में इस क्षेत्र में पढ़ी रहे तो उसका वजन कितना होगा अंदाज लगाना मुश्किल होगा यह कारण शरीर ही है।

इस स्थान से दो इंच ऊंचाई पर अर्द्ध अग्नि की थाली हो व उसमे छोटे-छोटे दहकते अंगारे रखे हो। ऐसा प्रतीत होता है। यह सूर्य अक्षर ब्रह्मलोक की ऊँचाई से दिखता है। किंतु यह सूर्य वास्तव में हमारे भुव लोक (पृथ्वी लोक) के सूर्य का प्रतीक मात्र है।

उदर स्थान :

उदर स्थान को ही स्व लोक माना गया है। यहाँ दहकती हुई अग्नि दिखती है, जो हमारे ही कारण शरीर की है, जो हमारे उदर स्थान के वहाँ दिखती है। यही पर अन्नमयः प्राणमय, मनोमय व विज्ञानमय कोष विद्यमान है। जिसका विस्तृत विवरण संपूर्ण यात्रा पुस्तक में संक्षिप्त रुप में दर्शाया गया है। आनंदमय कोष की स्थापना होने पर आनन्द प्राप्त होता है, जो हमारे स्वलोक तक सीमित है व अस्थाई है। बाहर तो प्रमाद है।

विष्णु :

श्रद्धा से विष्णु प्रकट होकर उदर स्थान से जल इत्यादि ग्रहण करते है।

उदाहरण के लिए- पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्तया प्रयच्छति।

तदहं भक्तयुपहतमश्नामि प्रयतात्मनः॥

सुखी शरीर :

यह शरीर इंद्र लोक, महा स्वर्ग में रहता है। यहाँ परम हंस देवात्मा/दिव्यात्मा सशरीर रुप में रहा जा सकता है। यहाँ अस्थाई निवास है। इसका उदाहरण पुराणों में ययाति एवं विश्वामित्र की तपस्याओं से लगाया जा सकता है।

मोती शरीर :

यह शरीर का वर्णन इसी पुस्तक में परम अक्षर ब्रह्म लोक में किया जा चुका है।

विनम्र शरीरः

पूर्ण ब्रह्म लोक हिरण्यमय प्रकाश के पूर्व सुषुम्ना नाड़ी एवं आत्मा का मिलन होने से विनम्र शरीर बनता है। इसके पश्चात ही हिरण्य मय स्वरुप पूर्ण प्रभु के दर्शन होते है। (देखे विराट स्वरुप पद के पश्चात)

क्या है शरीर के अन्दर

उपस्थ एवं गुदा के मध्य का भाग जहाँ रीढ़ की हड्डी का निचला शीरा होता है। वही से ध्यान योग के द्वारा यह हिस्सा खुलता है, जैसे किसी व्यक्ति के द्वारा अग्नि प्रकट की जाती है व धुंआ प्रथमतः उठता है। वैसे ही यहाँ भी धुंआ उठता है तथा हल्की सी ध्वनि के साथ यहॉ गठान खुलती है। जैसे कभी लकड़ी के जलने से हल्की आवाज आती है, ऐसी स्थिति बनती है। पहले मान्यता थी कि पहले कोई नागीन रहती है पर ऐसा कुछ भी नहीं है। ध्यान योग से देखने पर नागिन दिखती जरुर है, पर यह भ्रम मात्र है, व्यक्ति यदि भयभीत होता हे तो वह ऊंचाई प्राप्त नहीं कर सकता। वास्तव में यहाँ कारण शरीर सुप्त

दक्षिण की ओर बह रही है, जो हल्की बह रही है इससे यह उठती हुई उर्जा उत्तर से दक्षिण की ओर बह रही है। इससे आपका संपूर्ण शरीर दिख जाता है। आप पूर्ण नग्न व पूर्ण गंजे बालविहिन है। आपके दर्शनों को मैंने बड़े आराम से किए। आपने दक्षिण तरफ मुंह किया व दर्शन दिये आपका लोक अत्यंत सुंदर है व आपके लोक में प्रकाशित पृथ्वी ही है अर्थात् आप जहाँ खड़े है वही प्रकाशित भूमि है। यह दिव्य श्वेत प्रकाश उत्पन्न करती है तथा जैसे श्वेत अधपके अनार के दाने या अधपके अनार को ऐसे कांटा जाए कि दाने बाहर नहीं बिखरे हो ऐसी उपमा दी जा सकती है, किंतु यह हीरे जैसे है व छोटे है इसी से ये प्रकाशित है।

ऋग्वेद में क्षर ब्रह्म या धर्मराज का ब्यौरा इस तरह दिया गया है

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र।

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।

सह भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

सहस्त्रशिर्षा–पुरुषः–सहस्त्राक्षः–सहस्त्रपात्–स–भूमिम्–विश्वतः–वृत्वा–अत्यातिष्ठत्–दशंगुलम्।

अनुवाद :– (पुरुषः) विराट रुप काल भगवान अर्थात क्षर पुरुष (सहस्त्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहंस्राक्षः) हजार आंखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्माण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रुप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर(अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल

लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भक्तों का लोक :

श्वेत वस्त्र धारी भक्त भक्ति करते हुए यहाँ पर बैठे है ये संतों की तुलना भारत में आदिगुरु शंकराचार्य के द्व ारा रचित शिव पंचाक्षरी मंत्र में कि गई है। जिसका वर्णन निम्न है।

वशिष्ठ कुम्भोदभवगोतमाय मुनिन्द्र देवार्चित शेखराय चंद्राय वेश्वानर लोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवायः , कि गई है।

तप लोक/ईशान लोक :

दोनों नेत्रों के मध्य का स्थान है, यह लोक जब खुलता है तो सामने अत्यन्त सुंदर मन को मोहने वाला विशाल पृथ्वी से लेकर आसमान तक स्वर्ण चक्र दिखाई पड़ता है, जो स्वर्ण प्रकाश उत्पन्न करता है। यह चक्र के उपरी छोर पर तीरों के तथा मध्य में निचली छोर पर एक–दूसरे से जुड़े होते है। यह चक्र धीरे–धीरे घड़ी की पल की सुई की (सेकण्ड काटे की) तरह घुमता रहता है तथा इसके पीछे एक स्वर्ण चक्र और रहता है जो उसके विपरीत दिशा में धीरे–धीरे घुमता रहता है। इसी चक्र को विष्णु चक्र माना गया है। यह चक्र (सूर्य) आत्मा व सुष्मुना नाड़ी के मिलने से बनता है।

इसी लोक के खुलने पर उपरोक्तानुसार चक्र प्रथमतः दिखता है, किन्तु उत्तर दिशा में इसी लोक में विशाल सुरंग है, यहाँ विशाल अर्द्ध गोल पर्वत है व इसी पर्वत के पीछे निरंतर आग जलती रहती है। यही क्षर लोक की उत्पत्ति व विनाश यही पर होता है। यह पर्वत ऐसे टिका है जैसे इसके चारों तरफ काली शलाका हो जैसे भारत के शिव मंदिरों में लिंग रखे रहते है। यह विशाल श्याह ग्रह

चेतन शरीर :

यह शरीर मनुष्य के आगे–आगे चलता है। यह पथ प्रदर्शक रहता है, किंतु अस्थाई है।

तार–तार शरीर :

यह शरीर स्वलोक में होता है तथा इससे ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण शरीर में विणा के तार जैसे अलग–अलग बजते है वैसे ही यह शरीर हो जाता है, किंतु एक बार भय प्रकट हुआ कि यह शरीर मेरे हाथ से फिसल गया।

उदार शरीर :

यह मह लोक तक सीमित है। यहाँ व्यक्ति को सभी राममय/शिवमय लगने लगता है , प्रकृति का कण–कण शिवमय लगने लगता है। व्यक्ति व्यक्ति राममय लगता है। इसीलिए तुलसीदास जी ने यह शरीर धारण कर अनेक राममय व्यक्तियों को देखा , तभी आपने लिखा सियाराम मय सब जग जानी , करउ प्रनाम जोरि जुग पानी तथा अंत में फिर लिखना पढ़ा राम ते अधिक राम कर नामु। क्योंकि यह क्षेत्र खचाखच राममय, शिवमय से भरा हुआ है।

मोक्ष शरीर :

इसका वर्णन किया जा चुका है। (देखे मोक्ष लोक)

हंस शरीर :

विष्णु पद प्राप्त व्यक्ति पृथ्वी पर हंस रुप में घुमते है (देखे इसी पुस्तक में आत्माओं का व परशुराम व वराह का उल्लेख)

कारण शरीर :

यह शरीर ही वास्तव में आत्मा है। इसका नाश नहीं होता यह सुक्ष्म कण से लेकर अलग अलग स्थलों पर अलग अलग रंगों में रहता है।

1. पृथ्वी पर यह शरीर दो भागों में रहता है। प्रथम भाग नीचे लटका होता है, जो चार इंच के लगभग यह नाड़ियां पीले रंग के आकार की होती है व गुच्छे रुप में तथा उपरी भाग थोड़ा मोटाई के लिए होता है व बोलता भी है। बोलते समय नीचे थी। नाड़ी ऊपर की मोटाई से मिलती रहती है। आवाज स्पष्ट सुनी जा सकती है।

2. **पितृ लोक में :**
यहाँ का वर्णन पूर्व में किया जा चुका है (देखे स्वलोक)

3. **मोक्ष शरीर :**
इसका वर्णन इसी पुस्तक में मोक्ष पूर्ण मोक्ष रुप में किया गया

जागृत शरीर :

यह शरीर गुरु कृपा से ही जागृत किया जा सकता है। बिना गुरु किए कोई भी व्यक्ति इसे नही जगाए उसके पुष्प कई लोग भुगत रहे है स्कूल शरीर के नीचे के भाग में जहां रीढ़ की हड्डी होती है व पृथ्वी पर बैठने के थोड़ी उपर होती है (देखिए भू लोक) यहाँ हल्का धुंआ ध्यान योग से उठता है। जब यह शरीर जागृत होता है तो दूर कोई शुभ चिंतक/परिचित इत्यादि के कष्टों का भली भांति घर सोए बैठे उठे ज्ञान हो जाता है।

है जो अपने में हजारों पृथ्वीयों सूर्यों को आसानी से समा सकता है। यही से अन्य लोकों में जाने के रास्ते है, किन्तु गति धीमी हो जाती है।

उदाहरण के लिए: गीता के अध्याय 10 के श्लोक क्र. 21 में दिया गया है।

आदित्यानामहं विष्णुज्योतिषां रविरंशुमान्।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी।।

अर्थ :–मैं अदिति के बारह पुत्रों में विष्णु और **ज्योतियों में किरणों वाला सूर्य हूँ** तथा मैं उनचास वायुदेवताओं का तेज और नक्षत्रों का अधिपति चंद्रमा हूँ।

शिव लोक :

क्षर ब्रह्म रुप में श्वेत वस्त्र धारी शिवजी विशाल काला पत्थर नुमा पहाड़ी जो कुर्सी नुमा है (विराजमान है। जो वहाँ की भूमि से 8 फीट से 10 फीट उंचाई लिए हुई है। आप अत्यन्त सुन्दर मुख कृति लिए है एवं घुंघराले काले बाल आप के मस्तिष्क पर शोभायमान है आपकी दाड़ी विरल एवं श्वेत है।

1 **मंदाकिनी नदी :**

आप के मस्तिष्क पर मंदाकिनी नदी धीरे–धीरे महिन धाराओं में जो 8 से 10 या 15 लकीरें है, के रुप में निरंतर बहती रहती है।

इन धाराओं के मध्य भी जल निरंतर 1 सेमी. चौड़ाई में आपकी जटाओं पर निरंतर बहता रहता है।

इसकी उपमा पृथ्वी लोक पर मिली हुई एक सिप के आकार में दी जा सकती है। जो नीचे सुक्ष्म गडढ़ा लिए हुए एवं बाद में विस्तृत होते हुए दिखती है।

2 **वायु :**

यहाँ अत्यन्त धीमी गति से हवा बहती है जो मंदाकिनी नदी से उठती हुई लकीरों से टकराती है तो यह जल अटखेलिया करता हुआ प्रतीत होता है। जो आपकी जटाओं पर बह रहा है।

3 **अर्द्ध चन्द्रमा :**

आप के मस्तिष्क के 1 फीट की दूरी पर सूर्ख अर्द्ध चन्द्र जो खड़ा है। दिखता है जो आपके मुखाकृति को और सुन्दर बनाता है। जैसे यहाँ मिलने वाला गर्म सूर्ख लोहा की उपमा इस चन्द्र को दी जा सकती है।

4. **सूर्य :**

यहाँ छोटा सूर्य है जो केशरिया प्रकाश स्वरुप दिखता है। इसकी किरणें ऐसे प्रतीत होती है, जैसे किसी ने लंबवत धागे लटका दिये हो। इस सूर्य की उंचाई वहाँ की पृथ्वी से अधिक नहीं है। इन किरणों को आपस में नहीं मिलते दिखा गया।

5 **पृथ्वी :**

यहाँ की पृथ्वी छोटी है एवं पठारनुमा है तथा यहाँ की पृथ्वी श्वेत है।

6. **वस्त्रः**

आप अत्यन्त सुन्दर महिम स्वर्ण गोटे युक्त श्वेत वस्त्र धारण किये हुए है।

दुर्गा :

आपके एक हाथ में त्रिशुल व दूसरा हाथ वरदायी मुद्रा में दिखा। आपसे सिंदुरी आभा प्रकट हो रही है व माता शुद्ध रक्त वस्त्रों में भारतीय मुद्रा में

विराट स्वरुप पद :

यहां भी शरीर सूक्ष्म रुप में रहता है। सूक्ष्म शरीर के पीछे प्रकाश स्वरुप शेष नाग दिखते है। इसके पीछे रक्त प्रकाश युक्त चक्र जो पंखुड़ियों की तरह रहता है स्पष्ट दिखता है उसके पीछे आत्मा या कारण शरीर पुनः स्वर्ण प्रकाश लिए दिखता है। श्री गणेशजी स्पष्ट दिखाई देते है। यह क्षेत्र छोटा है , किंतु रक्त चक्र ऐसा लगता है जैसे पवन चक्की की पंखुड़ियाँ मंद वायु के झोंकों से धीरे-धीरे घुमती है। यही पर विनम्र शरीर बनता है। सुष्मुन्ना नाड़ी एवं आत्मा या कारण शरीर के मिलने से ही यह अति सुंदर दृश्य बनता है।

शरीर :

स्थूल शरीर :

जो आपका मेरा सभी को दिखाई देने वाला शरीर कर्मेन्द्रियों/ज्ञानेन्द्रियों तथा रक्त मज्जा हड्डी त्वचा केश नाखून अंगुलियां इत्यादि। यह शरीर मरने के बाद भी रहता है।

सुक्ष्म शरीर :

यह भी स्थूल शरीर की तरह ही रहता है, किंतु असाधारण आंखें प्राप्त व्यक्ति इसे देख सकते है। यह शरीर जीने वाला का भी.रहता है व मरने के पश्चात भी रहता है। मेरे इसी शरीर को पदों से विभूषित किया गया व इसी शरीर से सबकुछ देखा गया। मरने के बाद मे भी शरीर स्थूल शरीर जैसा ही रहता है।

राम लखन वैदेही जे तुलसी के परम सनेही। परन्तु आत्मा या कारण शरीर यहां पर भी नहीं टहरती। राम चरित मानस के सुंदरकांड में इसके बारे में प्रथम छंद में लिखा है शांतं शाश्वतं प्रमेय मनघं निर्वाणं शांति पदम)

षड़यंत्रकारी : ये षड़यंत्रकारी भक्त के मस्तिष्क में निवास करते है। किन्तु विष्णु पद प्राप्त होते ही , ये कतारबद्ध नीले प्रकाश स्वरुप होकर बाहर निकल जाते है।

ब्रह्मा पद :

दॉतों पर रद पटल पर अदभूत प्रकाश पंक्ति दोनों ओर दिखती है। इसके निकलते ही ये सभी आत्मा स्वरुप में पेट में रहते है। यहीं ब्रह्मा के शरीर में कल्पांत में सूक्ष्मरुप से रहती है। यह शाश्वत सत्य है। यह आत्माएँ छोटी सुक्ष्म मछलि यों के ढेर की तरह पेट में रहती है।

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे।

रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसज्ञके।

अर्थ – सम्पूर्ण चराचर भूतगण ब्रह्मा के दिन के प्रवेशकाल में अव्यक्त से अर्थात ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर से उत्पन्न होते है और ब्रह्मा की रात्रि के प्रवेशकाल में उस अव्यक्तनामक ब्रह्मा के सूक्ष्मशरीर में ही लीन हो जाते हैं।।18।।

तुलसीदासजी लिखते है शंकर सहज विष्णु अजतोहि (ब्रह्मा) , सकई ना राखि राम कर द्रोही। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि आपने अनेक विष्णु शंकर एवं ब्रह्मा देखे है।

खड़ी है। आपका निवास स्थान नेऋत्य कोण में है व आकाश में स्थित है।

आपके मस्तिष्क पर स्वर्ण आभा लिए हल्का छोटा मुकुट है। आपकी सुंदरता देखते ही बनती है।

अर्थववेदः काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट।

अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषों जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः ।।5

अर्थ– उसी मूल मालिक ने अष्टंगी (आठ अंगों वाली) माया दुर्गा को उत्पन्न किया।

विष्णु पद लोक :

यहाँ पर शेष नाग 5 फण धारी है। यहाँ पर भक्तों को पदारुढ़ किया जाता है। देखे इसी पुस्तक में विस्तृत विष्णु पद। इस लोक के बाद मार्ग दिखता नहीं है, किन्तु परम अक्षर ब्रह्म की कृपा से यह मार्ग खुलता है।

उदाहरण के लिए–गीता के अध्याय क्र.10 के श्लोक क्र. 29 अनुसार।

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।

पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्।

अर्थ– मैं नागों में शेषनाग और जलचरों का अधिपति वरुण देवता हूँ और पितरों में अर्यमा नामक पितर तथा शासन करने वालों में यमराज मै हूँ।.

मोक्ष लोक :

विष्णु पद प्राप्त व्यक्ति इस लोक को आसानी से देखते है। यह स्वर्ण व गुलाबी रंग लिए लोक है , यहाँ एक बिंदु से उक्त प्रकाश पट्टिकाओं में जो तिकोनों है दिखता है। यहाँ पर अर्द्ध विकसित डंडी सहित टूटे कमल की तरह

आत्माएं मोक्ष प्राप्त करती है। ये आत्माएं पृथ्वी से ऐसी उड़ती है जैसे जंगल में कोई आहट पाकर तीतर पक्षी उड़ते है।

राम लोक या बैकुण्ठ धाम लोक या प्रथम लोकः

यहाँ पर चाँदीयुक्त प्रकाश चहुंओर फैला हुआ है। जैसे घुमड-घुमड़ कर प्रकाश आ रहा हो। यह बैकुण्ठ लोक ही है, यहाँ पर विष्णु शेष सैय्या पर सोए हुए है एवं लक्ष्मी पैरों के पास बैठी हुई है। यहीं पर विष्णु लक्ष्मी पद युक्त आत्माएँ रहती है। आपका स्वरुप श्याम है तथा आपके शरीर से ऐसे प्रकाश प्रस्फूटित हो रहा है जैसे सावन का श्वेत पानी बनाकर बच्चें बुलबुले उड़ाते है। यह श्वेत चांदी का प्रकाश आपके शरीर पर स्थायी रुप से छाया हुआ है जो आपके शोभा को बढ़ा रहा है। आप टकटकी बांधे दिख रहे है। यही प्रकाश अभय पद विष्णु स्वरुप पद में बिछोने जैसा दिया जाता है तथा यही पूर्ण ब्रह्म का प्रथम प्रकाश है। (देखे विष्णु पद रुप एवं पूर्ण ब्रह्म प्रकाश) यही पर हजारों की संख्या में कड़ियों सहित झूले बंधे हुए है किंतु यह नहीं पता चलता की इन्हे किस सहारे पर बांधा गया है। आप पूर्ण रुप से नग्न है।

परम अक्षर ब्रह्म का दूसरा लोक : यहाँ पर ऐसे लगता है जैसे नीर कंचन पानी भरा हुआ हो व आर-पार दिख रहा हो पर वास्तव में यहाँ पानी नहीं है। वहाँ यह नील प्रकाश आपके प्रकाश से प्रकाशित है तथा आप वहाँ विराजमान है। इसी लोक में ऐसा लगता है जैसे छोटे छोटे पौधे के बगीचे लगे हुए है एवं शुष्क जमींन है, जिनमें कोई माली भी नहीं है जो उनको सिंचाई करता हो एवं पुष्प इत्यादि खिलते है। आप यहाँ पर पूर्ण नग्न है तथा आपको माधव नाम से जाना जाए एवं आप शंख चक्र गधा पदम युक्त हल्का नीला स्वरुप में है। जैसे

विष्णु पद :

यह छोटा लोक है एवं अंधकारमय है यहाँ पांच फण वाले लगभग 8 या 10 फीट ऊंचे शेष नाग है, जो हिलते भी नहीं है। यहाँ सूक्ष्म चांदी जैसे प्रकाश के बिछौने पर सूक्ष्म शरीर को खड़ा कर विष्णु पद दिया जाता है तथा स्वर्ण प्रकाश स्वरुप महीन स्वर्ण धोती पहनाई जाती है। आत्मा का स्वर्ण प्रकाश शेष नाग के पीछे होता है तथा शरीर सर्प के काटने से जैसे नीला होता है, वैसे हो जाता है तथा सुगंधित श्वेत एवं नीले फूलों की प्रकाश स्वरुप माला पहनाई जाती है। जहां जैसे सूर्य के काटने से मुंह में श्वेत झाग निकलते है वैसे ही मुंह से श्वेत प्रकाश निकलता है। यहाँ से आने के बाद पर श्याम लंबादे युक्त अदभूत आकृति दिखती है।

यह खतरनाक आकृति है। यह क्षर ब्रह्म का ही रुप है (देखे भयंकर काल ब्रह्म लोक) शायद यह आंखों से उत्पन्न श्याह प्रकाश है। यह प्रकाश की एक जोड़ी (दो आंखें) घुरती नजर आती है। यह कम क्षेत्र में श्याह प्रकाश दिन के उजाले में भी दिखता है। यह एक सेकण्ड में सब कुछ खत्म कर देने के लिए उदृत तैयार है, किंतु भक्त को ऐसा भयभीत होने की जरुरत नहीं है, इसलिए आपको कालरात्रि या भृकुटी विलास नाम दिए गए है। यहाँ पर रक्त प्रकाश कुछ समय पश्चात प्रकट होता है, जो संपूर्ण शरीर से प्रकट होता है। यही रक्त की शुद्धता का प्रमाण है या यो कहे कि नीला पड़ चुका शरीर वापिस उसी अवस्था में आ जाता है इसलिए ऐसा होता है। यही अभयपद है। तुलसीदासजी इसी को दोहे के रुप में लिखते देहू अभयपद नेहू निबाहू बंदौं

इस अग्नि से निकले आपके जगन्नाथ इसीलिए कहा गया कि आप अंश मात्र से पालन पोषण करते है। (देखे इसी पुस्तक में) आपको इसीलिए देवगुरु बृहस्पति कहा गया है। आप प्रत्यक्ष रुप से गुरु रुप में दिखते है। जैसे हम यहाँ गुरु बनाते है। उसी गुरु रुप दिखते है। यही पर आत्मा का इसी पूर्ण प्रकाश में विलय होता है। (देखे इसी पुस्तक में) इस उंचाई से सुरंग द्वारा रिक्त आकाश में जाया जाता है। यही पर सुषुम्ना नाड़ी आत्मा से मिलती है तथा अत्यंत विनम्र भाव होते है। आप नाग का हार पहने हुए है। इसलिए आपका नाम नागेन्द्रहाराय दिया गया है।

पद :

ईशान पद :

रोमावलियों से धान जैसा प्रकाश प्रस्फुटित होना शरीर के अंदर हजारों छोटे षटकाकार रक्त वर्ण का प्रकाश दिखना।

मस्तिष्क के बाई ओर अर्द्ध चंद्र विकसित होना मस्तिष्क पर सुई जैसी चीज गिरने से शरीर के अंदर समस्त स्थानों पर वैसी ही चुभन होना/ राख का शरीर पर गिरना। लोगों के सूक्ष्म मुण्डों की माला बनना। मस्तिष्क के दाहिनी ओर द्वितीया के चंद्रमा की तरह सूर्ख लोहे जैसा चंद्रमा बनना। अनेक आत्माओं को मोक्ष देना। तुलसीदास भी इस पद के बारे में राम चरित मानस के उत्तरकांड में रुद्राष्टक में स्पष्ट वर्णन लिखा है। (देखे रामचरित मानस उत्तरकांड काभूसुंडी गरुड़ संवाद छंद– नमामि शमीशान निर्वाण रुपं....)

भारत में पाये जाने वाले हल्के नीले संगमरमर के पत्थरों की मूर्तियाँ बनाई जाती है।

भयंकर काल ब्रह्म लोक का अंतिम क्षेत्र :

यहाँ लगभग 8 से 10 फीट ऊँचा विशाल चौड़ाई लिए हुए गैसों का पिरामिड है, जो 4 अलग–अलग रंगों की गैसों से ज्वालामुखी जैसा धधक रहा है।

इससे यहाँ पूर्ण विशाल मैदानी क्षेत्र में श्वेत प्रकाश उत्पन्न हो रहा है। इस मैदान में कोई भी नहीं है, किन्तु परछाई रुपी भयंकर काल क्षर ब्रह्म के रुप में दर्शन होते है। आपके दांत उपर के कीले जैसे जो चार दांतों को छोड़ दे तो दोनों और दिखते है। विशाल व भयावह दिखते है। आपकी उंचाई 6 1/2 फीट उंची है व काले रंग में कपड़े पहने व श्याह काला रंग है। क्षर ब्रह्म का लोक यही तक सीमित है।

यही वह क्षेत्र है, जहां देव गुरु बृहस्पति उंचे आसन पर बैठकर सभाएं लेते रहते है। (देखे इसी पुस्तक में) इससे स्पष्ट हो गया कि नीला रंग यही तक सीमित है व सभी प्रकार के ग्रह ही विष्णु पद (नौ ग्रह) स्वरुप है। यहाँ के बाद रंगों में परिवर्तन होता है। विज्ञान को जानने वाले लोग क्षेत्र को तारा सुपर नोवा समझ रहे है, किन्तु यह सत्य नहीं है। यही पर क्षर ब्रह्म द्वारा जो शिव रुप में है व जिसका वर्णन शिवलोक में किया गया है , के द्वारा परम् अक्षर ब्रह्म को मस्तिष्क पर आपके द्वारा प्रकाशित प्रकाश में उठाया जाता है,जैसे– मनुहार कर रहे हो ऐसा प्रतीत होता है। यही से विष्णु हल्के नीले रुप वाले या बैकुण्ड धाम या पूर्ण ब्रह्म के स्वर्णमय प्रकाश युक्त क्षेत्र या सतलोक जाया जा सकता है।

महास्वर्ग लोक :

इस क्षेत्र के देखते ही मुख से बरबस ही आह की आवाज निकलती है।

यह लोक अत्यन्त सुंदर है। यहाँ पर अत्यन्त हीमाच्छादित जैसी विशाल पृथ्वी है। यहाँ पर श्वेत पुष्प खिलते है। यहाँ पर सुंदर मंदिरों के बुर्ज (गुंबद) निले मणी रतनों से निर्मित है। शायद इनको ही देखकर भारत में पत्थरों के मंदिरों का निर्माण किया गया है व बावड़ियां इत्यादि है तथा यह पश्चिम में खुलती है। यहाँ यह जमींन विशाल किंतु सूर्य निकट है यह सूर्य चांदी या हीरे से भी अत्यंत सुंदर है व प्रकाश फैला रहा है। सूर्य विशाल तो है पर वहाँ की पृथ्वी से छोटा है, क्योंकि उसका पृथ्वी से अधिक दूरी नहीं है। जैसे इस पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी है। उतनी ही दूरी इस लोक में पृथ्वी व सूर्य की दूरी है, किन्तु इसका आकार चंद्रमा के आकार से तीन गुना बड़ा है। यहाँ पर अदृश्य आंख से भी इसके प्रकाश को देखना कठिन हो रहा था। प्रकाश में किरणें नहीं है। यहाँ पर इंद्रादि लोग देव निवास करते है। इस पृथ्वी से उपर अनन्त ग्रह दिखते है एवं आकाश नीला दिखता है तथा अनंत आकाश देखते है। वैसा ही साथ ही बहुत सारे ग्रह भी दिखते है। जैसे पृथ्वी से तारे देखते है, वैसे ही इन ग्रहों को आसानी से देखा जा सकता है। निश्चित रुप से इन ग्रहों पर भी अन्यान्य अक्षर ब्रह्म के लोक निश्चित है। यहाँ हीरे जैसी सुंदर आत्माओं का स्वरुप है। यहाँ की पृथ्वी श्वेत है। यहाँ से परम अक्षर ब्रह्म लोक (समलोक) की ओर जाने वाली सुरंग है। (देखे ब्रह्मांड का चित्र)

(देवा)भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है ।

शिवलिंग युक्त आकाशः

दो गोलाकार आकृतियाँ शिवलिंग जैसी उपर नीचे थोड़ी थोड़ी दूरी पर रखी हुई है तथा मध्य में बारीक काली रेत कण फैली हुई है। इस प्रकार यह दिखती है। जैसे किसी ने सुंदर रांगोली का निर्माण काले पत्थरों से निर्मित शिवलिंगों किया गया है , और दो लिंगों के मध्य उपर नीचे बारीक काली रेत से किया हो। यही कारण है कि यहाँ शिवलिंग को पूजा जाता है। यहाँ गुरुत्वाकर्षण शक्ति नहीं होने से व्यक्ति यहाँ से नीचे आता है ऐसा लगता है कि जैसे छतरी को खोलते है तो ऊपर दबाना पड़ता है। वैसे ही यहाँ स्थिति रहती है। विराट स्वरुप पद का रास्ता इसके पश्चात खुलता है।

पूर्ण ब्रह्म लोक :

यह लोक दो भागों में विभक्त है प्रथमतः भाग पीछे खुलता है जहां पर व्यक्ति को विराट स्वरुप पद प्राप्त होता है (देखे इसी पुस्तक में विराट पद)

द्वितीय भाग 90 डिग्री कोण पर खुलता है व यहाँ पर आपका प्रकाश तीव्र आंधी में उड़ते धूल कण हो ऐसा स्वर्ण प्रकाश दिखता है। आपका शरीर श्वेत है, आपकी जटाएं विस्तृत है तथा घुंघराले बाल है आपका एक हाथ वरद मुद्रा में है। आपके गले में अलौकिक सर्प है। ऐसा लगता है कि उम्र 18 वर्ष के नवयुवक की तरह लगती है। आपको इसीलिए वासुदेव कहा गया कि आप

उदाहरण के लिए–ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 19।

चमूषच्छयेनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि विभ्रत्।
अपामूर्भि सचमानाः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥19॥

अनुवाद– (चमूसत्) पवित्र (गोविन्दुः) कामधेनु रुपी सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाला पूर्ण परमात्मा कविर्दे व (विभृत्वा) सर्व का पालन करने वाला है (श्येनः) सफेद रंग युक्त (शकुनः) शुभ शास्त्रानुकूल साधना से दही रुपी पूर्ण मुक्ति दाता (आयुधानि) तत्व ज्ञान रुपी काल जाल विनाशक धनुष युक्त सारंगपाणी प्रभु है (सचमानः) वास्तविक (बिभ्रत) सर्व का पालन–पोषण करता है। (अपामूर्भिः) गहरे जल युक्त (समुद्रम्) सागर की तरह गहरा गंभीर अर्थात विशाल (तुरीयम्) चौथे (धाम) लोक अर्थात अनामी लोक में (महिषः) उज्वल सुदृढ़ पृथ्वी पर (विवक्ति)अलग स्थान पर भिन्न भी रहता है यह जानकारी कविर्देव स्वयं ही भिन्न भिन्न करके विस्तार देता है।

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृता ः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्।

सप्त–अस्य–आसन्–परिधयः–त्रिसप्त–समिधः–कृताः–देवा–यत्–यज्ञम्–तन्वानाः–अबध्नन् – पुरुषम्– पशुम्।

अनुवादः– (सप्त) सात संख ब्रह्माण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्माण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रुपी आग से दुःखी (कृताः) करने व ाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रुप सीमा में (आसन्) विद्यमान है (यत्) जो (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत धार्मिक कर्म अर्थात पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रुपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे

अक्षर ब्रह्म लोक का काला पर्वत :

अक्षर ब्रह्म लोक में भी विशाल काला पर्वत है, जहां पर इस लोक के ग्रहों का विनाश होता है तथा प्रकाश पहले सुर्ख किंतु बाद में दुधिया उत्पन्न होता है। जैसे विशाल दूध के सागर में भारी पर्वत फेंक दिया जाए तो दूध ऊपर उछलता है। ऐसा प्रकाश नष्ट हो रहे ग्रहों का दिखता है। यहाँ से प्रकाश की लपटें नीचे आती है। इससे स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में अग्नि की लपटें नीचे की ओर आते हुए प्रतीत होती है। इससे स्पष्ट है कि उंचाई पर अग्नि नहीं है एवं परम अक्षर ब्रह्म लोक स्वयं परम अक्षर ब्रह्म के प्रकाश से प्रकाशित है। यहाँ से सीधे परम अक्षर ब्रह्म लोक जाया जा सकता है।

राजराजेश्वरी लोक :

कमला या राजराजेश्वरी माता का लोक स्वयं आपके प्रकाश से प्रकाशित है तथा आपका प्रकाश लाल रंग का है, जिसमें कोई किरण नहीं है एवं सघन है। जहां माता राजराजेश्वरी बैठती है तथा आप का लोक अग्नेय कोण में स्थित है।

उदाहरण के लिए :ऋग्वेद में काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2।

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतं सुरुचं हारमह्यं घर्म श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।2२

इयम्–पित्र्या–राष्ट्रि–एतु–अग्रे–प्रथमाय–जनुषे–भुवनेष्ठाः–तस्मा–एतम्–सुरुचम्–हवारमह्यम्–धर्मम्–श्रीणान्तु–प्रथमाय–धास्यवे।

अनुवाद– (इयम) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे)

सर्वोत्तम (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी(राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते है, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की।

अक्षर ब्रह्म लोक :

आप इस लोक में निवास करते है। वह लोक अंधकारपूर्ण है, किन्तु आप उत्तर दिशा में सबसे ऊपर अंतिम छोर के ग्रह पर निवासरत है तथा आपके ग्रह में आपकी पीठ से स्वर्ण प्रकाश जलेबी के आकार में थोड़ा सा उत्पन्न हो रहा है। आपकी सिर्फ जटाएं है। आपकी जटाए श्याह रंग की है तथा जुड़ा बंधा है। केश सरल व बाई ओर लटक रहे है। इसलिए आपका नाम जटाधराय भी लिया गया है व आपका मुंह दक्षिण दिशा में है। आप भी पूर्ण नग्न है तथा वर्ण श्याम है। बदन इकहरा है तथा आपकी उंचाई छः फीट के लगभग है। यहाँ से सुरंग के द्वारा पूर्ण ब्रह्म लोक में जाया जाता है।

उदाहरण के लिए –अथर्ववेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरुष एवेदं सर्वं यदभूतं यच्च भाव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥2॥

पुरुष–एव–इदम् – सर्वम् – यत् – भूतम् – यत्– भाव्यम् – उत– अमृतत्वस्य– इशानः– यत्– अन्नेन– अतिरोहति।

अनुवाद– (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरुष) भगवान है वह अक्षर पुरुष अर्थात परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत) जो (भाव्यम्) विष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात मेहनत द्वारा (अन्नेन)अन्न से विकसित होता है। यह अक्षर पुरुष भी संदेह युक्त है , अर्थात मोक्ष प्रदाता नहीं है।

परम अक्षर ब्रह्म लोक (सत लोक):

अक्षर ब्रह्म लोक के पास से ही लगी सुरंग से आपके लोक जाया जाता है। (देखिए दो भागों में विभक्त ब्रह्मांड का चित्र व सुरंग) यहाँ आत्मा कवड़ी के समान रहती है व शरीर भी उस प्रकार सुंदर रहता है। कवड़ी के उपर जैसे दो स्वर्ण पट्टिकाएं छोटी रहती है। उसी प्रकाश से यहाँ आत्मा का स्वरुप बदलता है। यह लोक श्वेत है। आपके यहाँ जाया जा सकता है, किन्तु आपके विशाल व बड़े आकार के स्फटिक से निर्मित भवन के बाहर खड़ा रहा जा सकता है। आपके भवन से हल्का नीला व अधिक श्वेत प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा है। इसी लोक में संपूर्ण श्वेत प्रकाश यही से फैल रहा है। इस भवन के उपर विशाल व श्वेत छत्र है। जिसकी पृथ्वी के पदार्थो से किसी भी प्रकाश से उपमा नहीं दी जा सकती जो उथला (कम गहराई लिए हुए है) जो श्वेत पदार्थ से निर्मित है। यह आपकी शक्ति से ही टिका है। इसी छत्र पर सुई की नोंक इतनी बारिक स्वर्ण प्रकाश टिमटिमा रहा है जो छत्र की खुबसूरती बढ़ा देता है। यहाँ से नीचे आते समय ऐसा लगता है कि असंख्य श्वेत तारे झिलमिला रहे है। यहाँ असंख्य लोक है। निश्चित रुप से अदभूत दृश्य देखते ही बनता है। परम अक्षर ब्रह्म ही पूर्ण ब्रह्म है। यहाँ पर शांति है। आपका प्रकाश पूरे सतलोक को प्रकाशित करता है एवं प्रकाश श्वेत है इसलिए आपको भस्मांगरागाय नाम दिया गया है। यहाँ पर श्वेत तख्त है।